(कल्याण वर्ष २० अंक ११ से उद्धृत)

वर्त्तमान परिस्थिति

और

हमारा कर्त्तव्य

बिना मूल्य वितरित

प्रकाशक—घासीराम शर्मा

फाटक सूरजभान, आगरा

कृपया इसे पढ़कर दूसरों को देदीजियेगा

हमारा कर्त्तव्य

[ले०—हनूमानप्रसाद पोद्दार]

मनुष्य की बड़ी महिमा है। शास्त्रकार मनुष्य-शरीर को बहुत दुर्लभ बतलाते हैं और कहते हैं कि देवता भी इस शरीर की इच्छा करते हैं, क्योंकि जीव-जीवन की पूर्ण परिणति, स्व-स्वरूप-प्राप्ति या भगवत्-साक्षात्कार, इसी शरीर के साधनों से प्राप्त होता है। मानव-शरीर में आकर ही जीव यथायोग्य साधन करने पर जन्म-मृत्यु के चक्र से छूट कर कृतार्थ हो सकता है। मानव-शरीर की इसीलिए इतनी महिमा है कि उसमें भगवत्कृपा से वह विवेक मिलता है, जिससे नित्य-अनित्य और उपादेय-हेय वस्तु की मीमांसा करके जीव नित्य तथा उपादेय का ग्रहण और अनित्य तथा हेय का परित्याग कर सकता है।

परन्तु यदि मनुष्य का यही विवेक, मनुष्य की यही बुद्धि विपरीत-गामिनी हो जाय, भलाई को भूल कर बुराई में प्रवृत्ति हो जाय तो फिर वह मनुष्य को खूँखार हिंस्र जीव-जन्तु और पिशाच राक्षस से भी अधिक भयानक बना देती है और उसके परिणामस्वरूप जगत् में दुःखों की बाढ़ आ जाती है एवं फिर ऐसे असुर-मानव के लिए भीषण नरक-यन्त्रणा की व्यवस्था होती है। खेद है कि आज का मानव प्राणी इसी बुद्धि-विपर्यय के कारण हिंस्र पशु और पिशाच से भी अधिक भयङ्कर बन गया है। इसीलिए वह विज्ञान का दुरुपयोग कर क्षणों में लाखों निर्दोष नर-नारी और बालकों को अणुबम की आग में भूँजकर गर्व से छाती फुलाता

है, देश का देश को और जाति को जाति का शत्रु बनाकर एक-दूसरे का खून पीने के लिए बाध्य करता है, बूढ़े, रोगी तथा बच्चों को तबाह करता है और शताब्दियों की साधना से सञ्चित कलाराशि को देखते ही देखते राख का ढेर बना डालता है! धर्मप्राण भारतवर्ष में रहने वाला एक मानव-समुदाय तो आज इससे भी आगे बढ़ गया है, उसने तो अपना कायरतापूर्ण काली करतूतों से अपने मुख पर इतनी और ऐसी कालिख पोत ली है—नृशंसता का इतना नंगा नाच किया है कि आज के सभ्य कहलानेवाले उपर्युक्त नृशंस मानवों के सामने भी मुँह दिखाने में उसे शर्म आना चाहिये। परन्तु बुद्धि इतनी विपरीत हो गयी है कि आज वह इस नृशंसता को ही गौरव मान रहा है। लीगी मुसलमान नेताओं की प्रेरणा से अथवा स्टेट्समैन के कथनानुसार उनकी पूर्वयोजना के अनुसार कलकत्ते में ऐसे-ऐसे काण्ड हुए, जिन्हें पढ़-सुनकर राक्षस का हृदय भी दहल जाता है, शर्म भी शरमा जाती है और मानवता की आँखें लज्जा से सदा के लिए नीची हो जाती हैं।

निर्दोष हिन्दू अबलाओं के स्तन काट लेना, उनके हाथ पैर और स्तन काटकर सिर के बालों के सहारे उन्हें ऊंची जगह पेड़ों पर लटका देना, बच्चों को तीसरी-चौथी मंजिल से नीचे फेंकना, छोटे-छोटे बच्चोंके शरीरको दरवाजोंसे लगाकर कीलों से ठोक देना, बच्चोंको जलते घरोंमें फेंकना, माता-पिताको घायल करके उनके सामने अबोध बालिकाओं पर बलात्कार करना, खुले आम सड़कों पर स्त्रियोंकी इज्जत बिगाड़ना, उनके गुप्तांगोंमें तलवार-लाठी घुसेड़ देना, पेट्रोल फेंककर घरोंमें

आग लगा देना और स्त्री-पुरुष तथा बच्चोंको उनमें जला देना, पीछेसे आकर छुरा भोंक देना, लोगोंको घरोंसे खींचकर उनके जबड़े चूर-चूर कर देना, आंखें निकाल लेना, मुर्दोंपर शस्त्र चला उनके शरीर को कूटना, घायलों के शरीर पर घाव करना, घरोंको तोड़कर सामान लूट लेना, घोड़ों तथा दुधार गायोंको मार डालना और हजारों नर-नारियों और बच्चोंको पंगु बना देना—इस प्रकारके जघन्य कुकृत्य, ऐसे लोमहर्षक पैशाचिक काण्ड करनेवाले मनुष्योंसे रक्तपिपासु पिशाच और हिंस्र पशु तो सचमुच बहुत पीछे रह जाते हैं।

यह गुंडई साधारण मुस्लिम गुण्डों तक ही सीमित नहीं रही धर्म के ठेकेदार बने हुए मुल्लाओं ने भी दंगे के अवसर पर जो किया है वह हिन्दुस्थान का शासन-सूत्र सँभालनेवालों के लिए विचारणीय है। एक अंग्रेज दर्शक का कथन है:—

मैंने देखा कि दंगेके पहले चार दिनतक मुसल्मान गुण्डों के अनेक दल, कैदीके रूपमें हिन्दुओं को पकड़-पकड़कर मस्जिद के मुल्लाके पास लाते। कैदी अत्यन्त करुणाभावसे दया की भिक्षा मांगते पर मुल्ला प्रत्येकके लिए मृत्युदण्ड एवं भयानक यन्त्रणाका आदेश सुनाता।

कलकत्ते में जिन सहृदय मुसल्मान और हिन्दू सज्जनों ने हिन्दू और मुसल्मान परिवारों को शरण देकर बचाया उनकी तो प्रशंसा सभी को करनी पड़ेगी। भगवान् सबको ऐसी सुबुद्धि दे।

कलकत्ते के बाद प्रयाग, दिल्ली, नासिक, बम्बई, बड़ोदा, मुलतान, कोटा ढाका और सूरत आदि में भी दंगा हो गया। और भी पता नहीं, कितनी जगह होगा। बम्बई में छुरों-कटारों की सैकड़ों पेटियाँ बाहर से आई हुई पकड़ी गयीं। लखनऊ, इटारसो तथा प्रयाग में भी पकड़ी गयीं परन्तु बिना पकड़े ऐसा कितनो पेटियाँ डिलीवर हो गयी होंगी, इसे कौन जानता है। इधर बम्बई-कलकत्ते आदि में जो इतने अधिक कायरतपूर्ण छुरेबाजी के काण्ड हो रहे हैं, इससे यह सहज ही अनुमान लगाया जा सकता है कि निर्दोष प्राणियों के खून के प्यासे नेताओं ने भोली जनता को धर्म के नाम पर पागल कर उनमें बड़े व्यापकरूप से छुरे-कटार बँटवाये हैं और अभी बँटवा रहे हैं।

ऐसे दंगों में हिन्दू ही मरते हों सो बात नहीं है। मुसलमान भी काफ़ी मरते हैं। यद्यपि मुसलमान आक्रमणकारी होने के कारण हिन्दुओं की साम्पत्तिक हानि अधिक होती है, उन्हें पैशाचिक नृशंसता का शिकार होना पड़ता है और पहले-पहल मृत्युसंख्या भी उन्हीं की अधिक होती है परन्तु जब हिन्दू आत्मरक्षा या कोई कोई प्रतिहिंसा की भावना से प्रेरित होकर प्रत्याक्रमण करते हैं तब मुसल्मानों का संहार भी कम नहीं होता। सदियों से एक देशमें—अड़ोस-पड़ोस में रहने वाले, बल्कि अधिकांश के पूर्वज तो भारतीय हिन्दू ही थे। ऐसे मुसलमान का हिन्दूओं के साथ ऐसा भयानक दुर्भाव होना देश का तथा दोनों महान् जातियों का भी, वस्तुतः बहुत बड़ा दुर्भाग्य है। परन्तु नेताओं ने काफ़िरों को मार कर शहीद बनने की जो भ्रमात्मक भावना भर दी है, उसका तो यही परिणाम होगा।

असल बात तो यह है कि जनता जनता की दुश्मन नहीं है, उनमें

परस्पर शत्रुता उत्पन्न करने वाले तो नेता ही हैं। कलकत्ते में जिन गुण्डों ने लूट-मार मचाई, उनसे अधिक गुण्डे वे हैं जिन्होंने उनको ऐसा करने के लिए प्रेरणा की और इसकी व्यवस्था की। आज यदि मुसल्मानों में भी कोई गांधी-हृदय के रखने वाले मुसल्मान महानुभाव होते और वे मियाँ जिन्ना के पद पर आसीन होते तो देश में कितनी शान्ति फैली होती। आज जहाँ घर-घर में मोर्चेबन्दी, लड़ने की गुप्त-प्रकट आयोजना और अमानुषिक अत्याचारों की कल्पना हो रही है, वहाँ यदि शान्तिप्रिय साधु-स्वभाव नेताओं की सद्भावना तथा सदुपदेश से प्रेरित होकर दोनों जातियों की जनता परस्पर प्रेम से गले लगती, कंधे से कंधा भिड़ा कर खड़ी हुई होती, एक-दूसरे के दुःख में सहायता करती होती और सुख में परिवार के सदस्य की भाँति हिस्सा बँटाती रहती तो आज राष्ट्र की इस आत्म-हत्या का भयानक दृश्य जगत् के सामने कभी न आता। फिर आज-जैसी अस्थाई अन्तर्कालीन भारतीय सरकार नहीं बनती, पूरी स्वतन्त्रता मिलती और सब लोग पृथ्वी के समस्त राष्ट्रों के सामने सिर ऊँचा करके खड़े हो सकते। चालीस कोटि नर-नारियों की सम्मिलित शक्ति के सामने किसका साहस होता जो कोई अँगुली भी उठा सकता या ऐसी कौन-सी शक्ति रहती जो इन चालीस करोड़ कण्ठों की सम्मिलित आवाज़ का सम्मान न करती। पर दुर्दैववश भारत मोहित हो गया और अंग्रेज़ों की भेदनीति सफल हो गई! इसी से भारतियों की बुद्धि में विपर्यय हुआ और ऐसे नृशंस नेता उत्पन्न हो गये जो अपनी नेतागीरी की रक्षा के लिए भीषण नर-संहार, अमानुषिक अत्याचार और चिरकालीन अशान्ति तथा असुख के बीजस्वरूप भेदभाव की भीषण वृद्धि

कराने के निन्दनीय कार्य में लग गये ! परिणाम तो हमारे सामने ही है !

अभी कुछ ही वर्षों पहले भारतीय हिन्दू-मुसल्मानों में बड़ा प्रेम था, उनमें परस्पर विश्वास था और वे भाई-भाई की भाँति एक-दूसरे के सुख-दुःख के साथी थे। पर आज इन नेताओ की बदौलत वह स्थिति नहीं रही। हिन्दुओं में अन्त्यज भाइयों के साथ स्पर्श और खान-पानादि व्यवहार में आज जैसी छूट है, वैसी पहले नहीं थी तथापि उस समय परस्पर बड़ा प्रेम था। सच्ची आत्मीयता थी। आज के अम्बेडकरी अन्त्यज भाइयों की तरह उस समय महात्मा गाँधीजी पर आक्रमण करने, नेताजी को चोट पहुँचाने तथा कांग्रेस को असफल बनाने की बात वे नहीं सोचते थे और न उच्च वर्ण के हिन्दू ही उन्हें पराया समझते थे। उनकी वही स्थिति थी जो एक ही शरीर के पैर जैसे उपयोगी अंग की है। राजनीतिक दलबंदियाँ भी इतनी नहीं थीं। नरम-गरम केवल दो दल माने जाते थे। आज तो कांग्रेस में ही कई दल हैं जो एक-दूसरे को गिराने तथा नीचा दिखाने के लिए प्रयत्नशील हैं। हाल के राजनीतिक दलों में एक कम्यू-निस्ट दल है जिसके सम्बन्ध में यह कहा गया है कि वह हिन्दू मुस्लिम दंगों में मुसल्मानों का साथ देकर हिन्दुओं के घरबार जलाने तथा लूटने में सहायता देता है। पता नहीं, यह बात कहाँ तक सत्य है। पर यदि सत्य है तो यह इस बात का सबूत है कि आज का राजनैतिक जगत बहुत गंदा हो गया है। सुना गया है कि युक्त प्रान्त में और बिहार में जमींदारी-प्रथा के नाश के लिए कांग्रेस सरकार जो प्रयत्न कर रही है, इससे स्वभाविक ही जमींदार लुब्ध हैं और ऐसे अवसर पर कम्यूनिस्ट दल के लोग लुब्ध जमींदारों से मिलकर कुछ ऐसा कार्य करना चाहते

हैं जिससे कांग्रेस-सरकार के शासन में विघ्न उपस्थित हों। इधर यह सिद्ध हो चुका है कि लीगी मुसल्मान राष्ट्रीय मुसल्मानों को सजा देने पर तुले हैं। सर शफ़ात अहमद पर होने वाला आक्रमण और लाहौर म्युनिसिपलिटी में लीगियों द्वारा उसका समर्थन ही नहीं बल्कि ऐसे कार्यों के लिए प्रोत्साहन देना इसका ज्वलन्त उदाहरण है। यद्यपि यह सत्य है कि राष्ट्रीय मुसल्मान पहले मुसल्मान हैं और पीछे राष्ट्रीय। यह मौलाना अबुल कलाम आज़ाद साहेब-जैसे महानुभावों के व्याख्यानों से स्पष्ट है तथापि लीग तो उनसे नाराज है ही। मजदूर-मालिकों का सम्बन्ध भी अब प्रेम तथा आत्मीयता का नहीं रहा, उसमें भी बाहरी व्यावहरिकता आ गयी और परस्पर काफी तनातनी चल रही है। अभिप्राय यह कि आत्मीयता, प्रेम, सौहार्द, सहानुभूति, सौजन्य, पारस्परिक सहायता और सेवा की भावना तो मानो दुनियाँ से उठती चली जा रही है। अधिकार और अर्थ की ओर ही प्रधान लक्ष्य रखने वाले नेताओं की चेष्टाओं से जनता में इतना विष-विस्तार होगया है कि उसकी ज्वाला से सभी जल रहे हैं और पता नहीं इससे भी अधिक पीड़ित और जर्जरित होकर जनता की कितनी दुर्दशा होगी! अभी तो यह सब उन्नति के नाम पर हो रहा है पर जब इसका अन्तिम परिणाम सामने आवेगा, तब निस्सन्देह राष्ट्र का शरीर काँप जायगा।

इतना होने पर भी हिन्दू-संस्कृति अभी जीवित है, यही आशा का चिह्न है। भारत वर्ष सबसे पुराना देश है और यह सबसे पुरानी और महान् गौरवमयी सनातन हिन्दू-संस्कृति का आनन्द-निकेतन है। भारतवर्ष और हिन्दू-जाति के पास यदि कोई अमूल्य और अमिट सम्पत्ति है

तो वह केवल उसकी अध्यात्म तथा धर्ममूलक सनातन सँस्कृति ही है। इसी के बल पर भारत तथा भारत की आर्य हिन्दू-जाति शताब्दियों के भयानक-से-भयानक बाह्य और अभ्यन्तरिक—शारीरिक और नैतिक आक्रमण होने पर भी अभी तक जीवित है। जीवित ही नहीं, आज इस गयी-गुज़री स्थिति में भी वह अपना अमर सन्देश सुनाकर जलते हुए प्राणियों को सान्त्वना दे रही है कि 'घबराओ नहीं'। वर्णाश्रम तथा व्यक्तियों के विभिन्न धर्मों का विभाग करके समाज का संगठन करने वाली एवं सबको स्वधर्म में स्थिति रहकर ही जीवन-यापन करने की शिक्षा देने वाली; गो-ब्राह्मण असहाय, देश और धर्म की तथा पवित्र नारी-जाति की आततायियों के क्रूर हाथों से रक्षा करने के लिए सर्वस्व होम देने का आदेश करने वाली; परलोक और पुनर्जन्म में कर्मफल भोगने के सिद्धान्त को मानने वाली; धर्म और जाति के लिए सब को प्राणोत्सर्ग करने का मार्ग बतलाने वाली; नारी को पतिप्राणा होकर सतीत्व की रक्षा के लिए आत्मदान करने तथा जलती आग में आनन्द से कूद पड़ने का महत्त्व बताने वाली; बालकोंको गुरु-माता-पिता तथा देश-धर्म की सेवा के लिए जीव समर्पण करने का कर्त्तव्य बताने वाली, प्राणीमात्र से प्रेम करने वाली; सर्वभूतों के हितमें ही अपना हित बताने वाली; प्राणीमात्र में परमात्मा को देखनेवाली; अपनी आत्मा से जीवमात्र की आत्माको, मानव और पशु की तो बात ही क्या, नरक के कीड़े-जैसे चेतन तथा वृक्ष-लतादि जैसे जड़-जीवों में भी सर्वथा अभिन्न समझनेवाली और राग-द्वेष का पूर्णतया त्याग करके भगवत्स्वरूप में सायुज्य प्राप्त करने को ही जीवन का एकमात्र मुख्य उद्देश्य बताने वाली पवित्रतम तथा सर्वाङ्गपूर्ण हिन्दू-सनातन-संस्कृति जब तक जीवित

है, तब तक किसी को भय नहीं है। आओ-इससे शिक्षा ग्रहण करो, तदनुकूल जीवन बनाओ और अचल सुख-शान्ति को प्राप्त करो।' लौकिक जीवन में महान् अभ्युदय और पारमार्थिक जीवन में परमात्मा की प्राप्ति-दोनों का एक साथ सुन्दर साधन बतानेवाली यही एक सनातन संस्कृति है।

इधर अंग्रेजी शिक्षा तथा सभ्यता के प्रचार और प्रसार से बससे बड़ी हानि यही हुई कि भारतीय हिन्दू शिक्षित पुरुषों-की अपनी संस्कृति से श्रद्धा हट गयी। जिस संस्कृति की महत्ता को लेकर ही हिन्दू जाति जगत् में सम्मानित थी और आज इस परन्त्रताकी दशामें भी सम्मानित है, उसकी ओरसे उदासीनता आ गयी। यहाँ तक कि पाश्चात्त्य गुरुओं की कुशिक्षाके परिणामस्वरूप अपनी पवित्र संस्कृति में दोष दिखायी देने लगे और उस की अवहेलना तथा विरोध करने-में-उसे मिटाकर उसकी जगह दंभ-दर्प-अभिमान, काम-क्रोध-लोभ, ममता-मोह-अज्ञान, दुराशा-दुष्टता-कुटिलता और अन्याय-अनृत-अत्याचार आदि दोषोंसे भरी, एक-दूसरेको धोखा देने, नीचा गिराने, ठगने और मारने में ही कर्तव्य की इतिश्री समझने वाली, केवल धन-मान अधिकार अदि इहलोकिक भोगों की प्राप्ति और रक्षाको ही जीवन का परम तथा चरम उद्देश्य बतानेवाली आसुरी सभ्यताको प्रतिष्ठा में उन्हें गौरव का बोध होने लगा। ऋषिप्रणीत शास्त्र और परम्परागत सदाचार की शृंखला टूट गयी, मनमाना आचरण करने में बड़प्पन माना जाने लगा, मन और इन्द्रियों को गुलामी को व्यक्तिगत स्वतन्त्रता के नाम पर ग्रहण कर लिया गया और सब ओर उच्छृङ्खलता आ गई।

युग की लहर यहां तक बही कि उसके प्रभाव से इस युग के बड़े-

बड़े महानुभावों को भी हिन्दू शास्त्रों में शैतानियत दिखाई देने लगी और उन्होंने भी वर्णाश्रम को शास्त्रीय पद्धतिका सक्रिय विरोध किया। भारतीय हिन्दू सन्तान शास्त्रों की सर्वाङ्गपूर्ण व्यवहार-पद्धतिका अनुसरण न करके एकाङ्गी साधु-पद्धतिका अवलम्बन करने के कारण आततायी स्वभाव के लोगों का दुःसाहस और भी बढ़ गया। तथा मियाँ जिन्ना-जैसे लोगों ने इसे हिन्दुओं की कमजोरी समझकर और भी जोरों से आघात करना आरंभ किया। महात्माजी और कांग्रेस जितना ही दबते गए, उतना ही लाभ से लोभ बढ़ने की नीति के अनुसार उनका दिमाग बढ़ता चला गया। पाकिस्तान का दूसरा स्वरूप प्रान्तों का विभाजन स्वीकार कर लिया गया! अस्थाई अन्तर्कालीन सरकार बनी, उसमें लीग शामिल नहीं हुई। परन्तु उसमें भी हिन्दुओं के प्रति अन्याय और मुसल्मानों के साथ पक्षपात किया गया। यह इसीसे सिद्ध है कि चौबीस करोड़ हिन्दुओं की ओर से एक भी पृथक् प्रतिनिधि उसमें नहीं है। कांग्रेस के पाँच प्रतिनिधि हैं, जो अपने को हिन्दुओं का प्रतिनिधि नहीं मानकर राष्ट्र का प्रतिनिधि मानते हैं। सात करोड़ अन्त्यज भाइयों के एक प्रतिनिधि, सिखों, ईसाईयों तथा पारसियों के एक-एक प्रतिनिधि हैं, पर नौ करोड़ मुसल्मानों के पाँच प्रतिनिधि हैं। इतने पर भी मुस्लिम लीग के नेता इस सरकार को 'सवर्ण हिन्दुओं की सरकार' बतलाते हैं और इसे असफल करने के लिये हर प्रकार के वैध-अवैध, हिंसात्मक कार्य करने को तैयार हैं, जिसका ताजा सबूत 'डाइरेक्ट ऐक्शन' दिनके नाम पर होने वाला कलकत्ते का भयानक नरसंहार और अत्याचार है। इधर बम्बई और अन्य स्थानों में भी उसी के संस्करण आरम्भ हो गये हैं!

प्रथम तो हिन्दूजाति स्वभाव से ही दयालु तथा शान्तिप्रिय है, उसमें क्रूरता आती नहीं और आनी भी नहीं चाहिये, दूसरे कांग्रेस की नीति ने उसको बहुत कमजोर बना दिया है, तीसरे इधर उसमें अपनी संस्कृति के प्रति कुछ अश्रद्धा हो गई है और चौथे कृत्रिम राष्ट्रीयता के मोहने उसका कर्त्तव्यज्ञान हर लिया है। इसी का फल है कि आज ब्रिटिश भारत में और देशी राज्यों में उसकी संख्या सर्वाधिक होने पर भी उसकी संज्ञा 'साधारण' में है, वही अत्याचार की शिकार हो रही है तथा कहीं भी उसकी कोई सुनवाई नहीं होती। बल्कि पिटे और लुटे जाने पर भी उल्टे वही डाँटी जाती है और दोषी करार दी जाती है।

एक पक्ष ललकार-ललकार कर सीधी चुनौती दे रहा है और दूसरा पक्ष प्रेम के नाम पर किसी प्रलोभन की प्रतारणा से या कायरता से चुप-चाप बैठा हुआ अपने दुर्भाग्य के प्रकाश की बाट देख रहा है। याद रखना चाहिए कि सहनशीलता और कापुरुषता में, अथवा क्षमा-प्रेम और कायरता में बड़ा भारी अन्तर है।

एक मियां साहब कहते हैं कि 'सारे शहरों को बरबाद-वीरान कर दिया जायगा और सड़कें लाशों से पाट दी जायंगी। दूसरे खून की नदी बहाने की धमकी देते हैं, तीसरे नादिरशाह और चंगेजखां की याद दिलाते हैं, चौथे एक मुसल्मान के लिए मुस्लिमेतर सभी काफिरों का नाश करना धर्म बतलाते हैं और पांचवें पाकिस्तान या मौत के जंग में मुस्लिम छात्रों को सिर हथेली पर रख कर निकल पड़ने की आज्ञा देते हैं तथा मुस्लिम स्त्रियों से घरों में बुर्के के भीतर से मर्दों को मर्द-

बनाने का काम एव घरों के अंदर नौजवानों में पाकिस्तानी प्राण फूंकने का काम करने की आशा करत हैं ।

ऐसी अवस्था में क्या हिन्दू-जनता का—हिन्दू नौजवानों का यह कर्त्तव्य नहीं हो जाता कि वे इन क्रूर आक्रमणों से असहाय प्राणियों को बचाने के लिये तथा अपनी मा-बहिनों की इज्जत बचाने के साथ ही आत्म-रक्षा के लिये भली भाँति तैयार हो जांय ? और क्या हिन्दू सती देवियों का यह कर्त्तव्य नहीं है कि वे भी अपने साथ शस्त्र रक्खें और उनके पवित्र सतीत्व पर कुदृष्टि डालने वाले को रणचण्डी-बनकर उसी क्षण उचित सबक सिखा दें ? आज हिन्दू-देवियों में वह सात्विक शक्ति तो नहीं रही कि जैसे बन में अकेली दमयन्ती पर कुदृष्टि डालने वाला व्याध दमयन्ती की तीक्ष्ण दृष्टि पड़ते ही भस्म हो गया था वैसे ही उनकी दृष्टिमात्र से ही आततायी भस्म हो जांय। परन्तु पिछली शताब्दियों में जैसे राजपूत-रमणियों ने अपने पवित्र सती-धर्म की रक्षा के लिये प्राणोत्सर्ग किया था, वैसे ही अपनी तीक्ष्णधार कटार से आततायी को शिक्षा देकर आज भी हिन्दू-देवियाँ अपने सतीत्व को बचा सकती हैं। और ऐसा करने में प्राणों की आहुति देकर धन्य हो सकती हैं। हमारी कायरता से आततायी का आततायीपन

बढ़ जाय और उसके फलस्वरूप उसको तथा सारे समाज को नरक की आग में जलना पड़े, यह कदापि वाञ्छनीय नहीं होना चाहिये।

सर्वोत्तम साधन तो अहिंसा है। अहिंसाकी इतनी प्रतिष्ठा हो जाय कि फिर हमारे समीप आते ही हिंसक जन्तु की भी हिंसावृत्ति मर जाय। पर ऐसी साधना आज शायद ही किसी की हो। ऐसी स्थिति में महात्माजी के शब्दों में 'विवेकयुक्त हिंसा' से काम लेना जाहिये। हम किसी पर अकारण आक्रमण न करें, किसी पर कदापि जरा भी अत्याचार न करें, किसी के धन-जन अथवा इज्जत-आबरू लूटने की कभी कल्पना न करें प्रतिहिंसा तथा प्रतिशोध का भाव भी न रक्खें परन्तु धन-जन तथा धर्म की रक्षा के लिये, माता-पत्नी और बहिन बेटी की लाज बचाने के लिये, लूटने तथा आग लगाने को आये हुए आततायी के क्रूर हाथों से बचने के लिए और गरीब असहायको निर्भय करने के लिये तो सबको सदा-सर्वदा सब प्रकार से वीरता के साथ खुले तौर पर भली-भाँति प्रस्तुत रहना ही चाहिये। इसमें शास्त्र-दृष्टि से जरा भी दोष नहीं है। वरन् इस प्रकार की विकट परिस्थिति में यही कर्त्तव्य—धर्म है।

महात्मा गान्धीजी ने कहा है—

······इतना तो स्पष्ट ही है कि यदि लोग संभवतः

वीरोचित अहिंसा के प्रयोग के लिये तैयार नहीं हैं तो उन्हें आत्मरक्षा के लिये बल प्रयोग करने को तैयार रहना चाहिये पर उसमें छल-छद्म न हो, आत्मरक्षण सर्वथा विशुद्ध और सरल हो, तथा कापुरुषता और क्रूरता को भी स्थान न दिया जाय। इसीलिये उसे कभी गुप्त नहीं रक्खा जाय। पीछे से छुरा भोंकना और पकड़े जाने से बचने की चेष्टा करना ऐसी ही बातें हैं। मैं जानता हूँ कि हम लोग निहत्थे हैं और हथियार चलाना नहीं जानते। यह अच्छी बात है या नहीं, इसपर परस्पर विरोधी रायें हो सकती हैं; परन्तु इसे तो कोई अस्वीकार नहीं कर सकता कि आत्मरक्षा के लिये मनुष्य को हथियार चलाने की शिक्षा प्राप्त करना आवश्यक नहीं है। इसके लिये तो आवश्यकता होती है मजबूत हाथों की और उससे भी मजबूत दिल की।

यह स्पष्ट है कि दूसरे को चोट पहुँचाना हिंसा है: परन्तु मन-ही-मन दूसरे को चोट पहुँचाने का विचार रखते हुए भी केवल डरपोकपन से अपनी या अपने पड़ोसी की रक्षा के लिये तैयार न होना तो शायद उसमे भी बुरी हिंसा है।'

कलकत्ते में बंगाल के लीगी मुसल्मानों ने हिन्दुओं से ललकार कर कहा है—

'बङ्गाल मुस्लिम लीग का राज है। अगर तुम्हें जिंदा

रहना है तो हम मुसल्मानों का गुलाम बनकर जीना पड़ेगा। पहले जमाने में जब इस सूबे के मालिक मुसल्मान थे, तब हमारी खुशी और इनायत के हासिल करने के लिए तुम अपनी मां-बेटी और बहिनों का सिंगार कर दरबारों में पेश करते थे। अब २५० वर्षों के बाद फिर बंगाल में मुस्लिम राज कायम हो गया। अगर तुम जिन्दा रहना चाहते हो तो उसी तरह हमारे साथ पेश आओ, नहीं तो, हम खून की नदियां बहा देंगे। एक-एक हिन्दू का नामोनिशान मिटा दंगे।'

बंगाल के कुछ एम० एल० ए० मुसलमानों ने कहा है—

'हिन्दू देवियां—हिन्दू महिलाएं वेश्याएं हैं, उनके साथ उसी तरह पेश आना चाहिए।'

'आपको (मुसल्मानों को) चाहिए कि उनकी (हिंदुओं की) दूकानें लूट लें या प्रत्येक उपाय से उसे बन्द कर दें।' 'हम हिन्दुओं को मार डाल।'

ऐसा कहा ही नहीं जा रहा है, बंगाल में वस्तुतः ऐसा किया भी जा रहा है। मुसल्मान गुण्डों के द्वारा दूकानें लूटी जाती हैं और गाँवों में आग लगायी जाती है। हिन्दू व्यापारी जिंदा जलाये जा रहे हैं। लोगों को जबरदस्ती मुसल्मान बनाया जा रहा है। और पिता, पति तथा भाई के हाथों से—दिन दहाड़े हिन्दू-बहू-बेटियों को जबरदस्ती छीन लिया जाता है और उनपर अमानुषिक अत्याचार किये जाते हैं। बङ्गाल के गाँवों में मुसल्मानों का यही एक काम हो गया है कि

जिस किसी प्रकार से हिन्दू-देवियों का सतीत्व नष्ट किया जाय। मतलब यह कि बंगाल में हिन्दुओं का जान- माल और इज्जत-आबरू सभी कुछ मुसल्मान गुण्डों के हाथों में है!

नोआखाली में तो कांग्रेस दफ्तर तक जला दिया गया। एक कांग्रेस कार्यकर्त्ता को मार डाला गया। चटगाँव, ढाका मैमनसिंह आदि जिलों में लगातार ही ऐसे भयानक अत्याचार हो रहे हैं!

बंगाल में मुसल्मानों की संख्या हिन्दुओं से कुछ ही अधिक है, वहाँ यह स्थिति है। फिर पञ्जाब, सीमा प्रान्त और सिन्ध के उन स्थानों में, जहाँ मुसल्मानों की संख्या बहुत अधिक है—वहाँ पता नहीं, इन गुण्डों के द्वारा कैसे २ अत्याचार होते होंगे या होसकते हैं!!

इस स्थित में जिन प्रान्तों में हिन्दू-संख्या अधिक है, उन हिन्दुओं में यदि हिन्दू मा-बहिन और बहू-बेटियों पर होनेवाले इस पैशाचिक, कायिक, वाचिक और मानसिक अत्याचार के कारण पागलपन आ जाय और उनमें भी ऐसी ही जघन्य पाप-भावना जाग्रत् हो जाय,—जो हिन्दुओं में नहीं होनी चाहिये और जिसकी सम्भावना भी नहीं है—तो मुसलमानोंके लिये भी कम विपत्ति की बात नहीं हो सकती। परन्तु मुसल्मान तो हिन्दुओं की इस क्षमारूपी कायरता का लाभ उठाकर यह निश्चय कर चुके हैं कि इस हिन्दू कायर हैं। मुसल्मानी प्रान्तों में हम जो चाहें सो करें हिन्दू-प्रान्तों में हिन्दू हमारा कुछ भी नहीं बिगाड़ सकते और न कांग्रेस सरकार ही हमारा बाल बाँका कर सकती है!

बात भी कुछ ऐसी ही है। मुसल्मानों के अमानुषी अत्याचारों को रोकने का प्रस्ततः कोई भी ठोस उपाय अभी तक नहीं हो रहा है।

मैं केन्द्रिय सरकार से विनयपूर्वक प्रार्थना करता हूँ कि वह इन नृशंस अत्याचारों की ओर पूरा ध्यान दे। मेरा विश्वास है कि पंडित जवाहरलालजी नेहरू-सरीखे निर्भीक पुरुष तथा उनकी सरकार इस प्रकार के पैशाचिक अत्याचारोंको—जो पहले से आयोजित हैं और आज भी जिनका समर्थन किया जा रहा है तथा अन्यान्य स्थानों में भी वैसे ही करने का आयोजन एवं सूत्रपात हो रहा है,—कदापि नहीं सह सकेंगे और अपनी पूरी शक्ति लगाकर इन्हें असम्भव कर देंगी। अन्यथा, न तो न्यायकी रक्षा होगी, न प्रजा सुख-शान्ति से रह सकेगी और न शासन दण्ड का ही चलना संभव होगा।

मेरी प्रान्तीय कांग्रेस सरकारों से भी विनम्र प्रार्थना है कि बड़ी साव-धानी के साथ पूरा बल लगाकर ऐसे अत्याचारी की जड़ काट दें। नहीं तो, यदि यह प्रवाह यों ही चलता रहा और परिस्थिति बेक़ाबू हो गयी तो पीछे शांन्ति-स्थापन करने में बड़ी कठिनता होगी।

लीगी मुसलमानों का गुण्डईसे कितना प्रेम होगया है इसका एक ताजा सबूत है—उस दिन नागपुर असेम्बली में जब 'गुण्डा कानून' स्वीकृत हुआ तब उसके विरोध में लीगी सदस्य उठकर असेम्बली-भवन से बाहर चले गये।

अभी उस दिन एक मुसल्मान सज्जन ने यह स्पष्ट कहा कि 'इस बातको हम मानते हैं कि हिन्दू कायर हैं और मुसल्मान गुण्डे हैं पर अराजकता के समय गुण्डे ही सफल होते हैं।'

केन्द्रीय तथा प्रान्तीय सरकारों को चाहिए कि गुण्डई के इस प्रवाह

को कड़ाई से रोक दें और हिन्दुओं को भी धर्मरक्षार्थ प्राणों का मोह छोड़ कर इस गुण्डेपन से बचने के लिए विशेप रूप से सतर्क सब प्रकार से प्रस्तुत हो जाना चाहिये।

वर्तमान समय में कम-से-कम निम्नलिखित कार्य करने की तो अत्यन्त आवश्यकता है—

१—नगरों और गांवों के प्रत्येक मुहल्ले में सुव्यवस्थित 'रक्षा-दल' का निर्माण करना।

२—आत्मरक्षा के लिए जनता में विश्वास उत्पन्न करना।

३—अपने में इतना बल बढ़ाना कि जिसे देखकर दूसरों के मन में कभी किसी प्रकार का अत्याचार करने का साहस ही न हो।

४—घायलों तथा बीमारों की सेवा के लिए मुहल्ले-मुहल्ले और घर-घर में 'फर्स्ट एड' (शीघ्र उपचार) की व्यवस्था करना। प्रसंग आने पर सेवा शुश्रूषा का प्रबन्ध करना। राशन से बचाकर कुछ अन्न का घरों में संग्रह करना।

५—घायलों, बीमारों तथा अत्याचार पीड़ित परिवारों तथा व्यक्तियों की सहायता के लिए धन एकत्र करना और समय पर उसका सदुपयोग करना।

६—स्त्रियों को आत्मरक्षा के योग्य साधन प्रदान करना और उनमें वीरांगनाओं के स्वभाव की स्फूर्ति हो, ऐसा उपदेश देना तथा साहस भरना।

७—बच्चों को सदा सुरक्षित रखना।

८—आपस के मतभेदों तथा वैर-विरोध को भुलाकर आततायी का सामना करने के लिये संगठित रूप से वीरता के साथ तैयार रहना।

९—अफवाहें न फैलने देना, न अफवाहों पर विश्वास करना परन्तु सदा चौकन्ना भी अवश्य रहना।

१०—छेड़-छाड़ न हो, और मामूली छेड़-छाड़ में बात न बढ़ने पावे, इसके लिये सतर्कता तथा बुद्धिमत्ता से काम लेना।

११—हिन्दू-मुसल्मानों में तथा अन्यान्य परस्पर-विरोधी लोगों में प्रेम, सद्भाव तथा विश्वास उत्पन्न हो इसके लिये सदा सच्चे दिल से एक दूसरे की सेवा तथा सहायता करना।

१२—हिन्दू-मुसल्मान कोई भी शरण में आ जाय, उसको ईमानदारी के साथ आततायी के हाथों से बचाना, परन्तु होम करते हाथ न जल जाय, इसके लिये पूरा सावधान भी रहना।

यहाँ जगत में जो कुछ हो रहा है सो सब भगवान् की ही लीला हो रही है और हो भी रही है भगवान में ही। यह रहस्य जिस की समझ में आगया है वह तो दूसरे ही राज्य मे पहुँच गया है और वह जिस स्तर में होता है, उससे इस दुनिया का कोई खास सम्बन्ध भी नहीं होता। तथापि इस दुनिया के स्तर में उतरने पर व्यवहार के क्षेत्र में उस पुरुष पर भी कुछ दायित्व आ जाता है और उसका भी कुछ कर्त्तव्य हो जाता है एवं

उसे राग-द्वेष रहित चित्त से चतुर नट (actor) की भाँति अपने हिस्से का अभिनय भी करना पड़ता है। आततायी आततायीपन का नाश करना भी लोकसंग्रह का एक महत्त्वपूर्ण अंग है।

ये सब लौकिक उपाय हैं और व्यवहार में अपने-अपने अधिकार के अनुसार इनको काम में लाने की अत्यन्त आवश्यकता है। जो लोग इन उपायों से काम नहीं लेते उन्हें प्रायः विफलता ही प्राप्त होती है और अंत में गहरा पश्चात्ताप करना पड़ता है।

इतना होने पर भी असली उपाय तो दूसरा ही है, और वह है 'भगवत्प्रीत्यर्थ देवाराधन अथवा भगवदाश्रय-पूर्वक भगवदाराधन।'

ऐसे अवसरों पर जगह-जगह धार्मिक अनुष्ठान, शास्त्रीय मन्त्रपुरश्चरण, वैदिक तथा तान्त्रिक प्रयोग, चण्डी गणेश की सविधि उपासना, तथा वैदिक और पौराणिक यज्ञ-याग होने चाहियें। इनसे प्रकृति के मूल में परिवर्तन होगा और लोगों की बुद्धि में सात्त्विकता आवेगी। साथ ही अपनी-अपनी स्थिति के अनुसार विश्वशान्ति तथा धर्माभ्युदय की कामना से अथवा केवल भगवत्प्रीत्यर्थ सात्त्विक दान, श्रीमद्भागवत-श्री मद्भगवद्गीता तथा श्रीरामचरितमानसके पारायण और अखण्ड हरि-कीर्तन होने चाहियें। सच्चे हृदय से सबको सद्बुद्धि की प्राप्ति तथा सबके कल्याण के लिए भगवान् से प्रार्थना करनी चाहिए।

यह याद रखना चाहिए कि हिन्दू मुसल्मान, पारसी ईसाई सभी एक ही भगवान् के स्वरूप, अंश या सन्तान हैं। सभी में आत्मारूप से एक ही भगवान् विराजमान हैं। एक के अमंगल में दूसरे का अमंगल और एक के मंगल में दूसरे का मंगल निहित है। अतएव ऐसी सद्भावना और प्रार्थना करनी चाहिए कि भगवान् सबका कल्याण करें। सब को सन्मति और सद्गति प्रदान करें। जगत् में सर्वत्र सुख-शान्ति का प्रसार और विस्तार हो। सभी सुखी हों, सभी तन-मन से निरोग हों, सभी सदा मंगलों का साक्षात्कार करें और दुःख का भाग किसी को भी न मिले।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्व सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद्दुःखभाग्भवेत् ॥

समाप्त

G. M. P. Agra.